भारतेन्दु युग

प्रश्न 1. भारतेन्दु युग की विशेषताओं का उल्लेख करिए।

उत्तर—आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने खड़ी बोली गद्य को वास्तविक रूप में जन्म देकर तथा विविध रूपों में उसका विकास करके हिन्दी साहित्य के भण्डार की वृद्धि की भारतेन्दु काल की प्रमुख प्रवृत्तियों को इस प्रकार परखा जा सकता है—

(1) देश-प्रेम की भावना—इस काल के प्रत्येक कवि के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना है। किन्तु इस भावना के साथ-साथ इनमें राज भक्ति की भावना भी रही है। भारतेन्दु जी उस समय के देश की स्थिति के विषय में लिखते हैं—

आबहु सब मिलि रो बहु भारत माई
हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाइ।

देश की स्थिति को सुधारने के लिए इस काल के कवियों ने भगवान् की प्रार्थना की। फिर भी इस युग के कवियों में राजभक्ति की भावना बनी रही थी। फिर भी राष्ट्रीयता की भावना सर्वोपरि रही है—

अंग्रेज राज सुख साज सजै सब भारी।
पै धन विदेश चलि जाति यह अति ख्वारी॥

(2) प्रकृति चित्रण—इनका प्रकृति चित्रण प्रभावी और रमणीक है। डॉ. शिवकुमार शर्मा की मान्यता है कि ये लोग प्रकृति के वर्णन की ओर अधिक रमे हैं। बाह्य प्रकृति के वर्णन में नहीं। फिर भी इनका प्रकृति-चित्रण बहुत सुन्दर बन पड़ा है। भारतेन्दु जी का 'यमुना छवि वर्णन' पर्याप्त रोचक है।

(3) समाज सुधार की भावना—यह एक ऐसा युग था जिसमें अनेक समाज सुधारकों का आगमन हुआ। इन सभी समाज सुधारकों का प्रभाव इस काल के कवियों पर भी पड़ा। इसी कारण इस काल के

कवियों ने स्त्री-शिक्षा, वर्ण-भेद त्याग, बाल विवाह की समाप्ति, विधवा विवाह का महत्व जैसे विषयों पर भी लिखा है।

जन्म पत्र बिनु मिले ब्याह नहीं होत देत अब।
बालकपन में ब्याहि प्रीति बल नाम कियो सब॥

(4) प्राचीन संस्कृति के प्रति मोह—भारतेन्दु युगीन कवियों में अपनी संस्कृति के प्रति मोह था। यह प्राचीनता को ज्यों-त्यों स्वीकार कर लेना चाहते थे और नवीन को भी अपनाना इनकी मनोवृत्ति का एक अंग था। वे भारतीय संस्कृति को एक ओर अंग्रेजों तथा दूसरी ओर मुसलमानी संस्कृति से बचाना चाहते थे—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा और मृत समान है।

(5) जन-जीवन का काव्य—यह कविता राज दरबारी न होकर पूर्णतः मुक्त थी। **शिवकुमार शर्मा** के शब्दों में, "यह कविता केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर मनुष्य की एकता, समानता और भाईचारे का साहित्य है। जिसमें अनीति का विरोध और मूल्यों की स्थापना का प्रयास है।"

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार इस काल का कवि समाज में सुधार चाहता है। उनकी मान्यता है भारतेन्दु युग का साहित्य जनवादी इस अर्थ में है कि वह भारतीय समाज में पुराने ढाँचे से सन्तुष्ट न होकर उसमें सुधार को चाहता है। वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर, मनुष्य की एकता, समानता और भाईचारे का भी साहित्य है। भारतेन्दु स्वदेशी आन्दोलन के ही अग्रदूत न थे, वे समाज सुधारकों में भी प्रमुख थे।

भारतेन्दु जी ने समाज की दोषपूर्ण व्यवस्था को इस प्रकार स्पष्ट किया है।

गल्ला करै लगा है कि भैया जो है सो है।
बनियन कौ गम भला है कि भैया जो है सो है॥

समाज पर अंग्रेजों की शोषण-नीति की भी कटु आलोचना की है—

सबके ऊपर लगा टिकक्स जी उड़ा हसि मेरा।
रौवे के चाहिए हंसी ठांठी उठाना कैसी।

(6) हिन्दी भाषा पर बल—भारतेन्दु जी अर्थों में स्वदेशी के पक्षधर थे और निज भाषा के उन्नायक भी थे। उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य का विविध मुखी विकास किया। उनकी मान्यता थी—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति की मूल।

भारतेन्दुजी ने मातृभाषा का प्रचार करते हुए साहित्य में सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया।

(7) गद्य के विविध रूप—इस युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, खड़ी बोली गद्य का विविध रूपों में विकास, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचना, प्रहसन, संस्मरण आदि का जन्म और विकास इसी युग की देन है।

(8) विविध पत्रिकाओं का प्रकाशन—इस युग में विविध पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हुआ, जिनके माध्यम से खड़ी बोली का प्रचार एवं प्रसार किया गया। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'ब्राह्मण', 'हिन्दी प्रदीप', 'आनन्द कादम्बिनी' आदि इस युग की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ हैं।

(9) काव्यधारा में नवीनता—इस युग में गद्य के साथ-साथ पद्य में भी रचनाएँ की गयीं। भारतेन्दु जी ने कविता के लिए ब्रज भाषा को ही माध्यम बनाया। उनकी ब्रज भाषा में भी स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं। इस काल के कवियों ने काव्य में स्वाभाविक अलंकारों, मनोभावों और उक्तियों को स्थान दिया। कजरी, चेती, ठुमरी, खेमटा, अद्धा, होली, लखनी, बिरहा, चचैनी इत्यादि ग्राम गीतों को स्वीकार करके भारतेन्दु जी ने हिन्दी काव्यधारा में नवीनता का समावेश किया।

(10) व्यंग्योक्तियों का प्रयोग—इस युग की प्रमुख विशेषता है—व्यंग्योक्तियों तथा कटूक्तियों का

गुप्त ने भी अपनी रचनाओं में हास्य-व्यंग्य का समावेश किया। भारतेन्दुजी ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति का पर्दाफाश करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहते हैं।

भीतर-भीतर सब रस चूसे, बाहर से तन-मन धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन, नहिं अंगरेज॥

उपसंहार—इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतेन्दु युग का हिन्दी साहित्य के इतिहास में विशिष्ट महत्त्व है। इस युग में नवीन-भाव, भाव, एवं शैली का सूत्रपात हुआ तथा भावी लेखकों का मार्गदर्शन भी हुआ।